بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक**29.09.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

अन्सार को विशेष रूप से सर्वाधिक इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए कि उनका प्रत्येक सदस्य जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का आदी हो।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मजलिस अन्सारुल्लाह यू के का सालाना इज्तिमा शुरु हो रहा है, इस हवाले से मैं अन्सार को एक अत्यंत महत्तव पूर्ण तथा मूल बात की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ और वह है नमाज़। नमाज़ प्रत्येक मोमिन पर फ़र्ज़ है लेकिन चालीस साल की आयु के बाद यह ध्यान पहले से बढ़कर पैदा होना चाहिए कि हर दिन के बढ़ने से मेरे जीवन के दिन कम हो रहे हैं। ऐसी हालत में अल्लाह तआला की इबादत तथा नमाज़ की ओर अधिक ध्यान उत्पन्न होना चाहिए कि समय तीव्र गति से आ रहा है जब मैंने अल्लाह तआला के समक्ष पेश होना है और वहाँ हमारे प्रत्येक कर्म का हिसाब किताब होना है। अतः ऐसी अवस्था में एक मोमिन को, प्रत्येक उस व्यक्ति को जिसको मरने के बाद के जीवन तथा आख़िरत के दिन पर ईमान है, चिन्ता होनी चाहिए कि हम अल्लाह तआला के भी हक़ अदा करने वाले हों और उसके बन्दों के भी हक़ अदा करने वाले हों और ऐसी अवस्था में अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित हों जब अपने सामर्थ्य के अनुसार ये हक़ अदा कर रहे हों। नमाज़ पढ़ने की ओर जब भी अल्लाह तआला ने ध्यान दिलाया है तो इसके साथ ध्यान दिलाया है कि नमाज़ यथावत भी हो, सारी नमाज़ें अपने समय पर अदा हों और जमाअत के साथ अदा हों, नमाज़ को क़ायम करने का आदेश है। और नमाज़ को क़ायम करने का मतलब ही नमाज़ को समय पर और जमाअत के साथ अदा करना है। लेकिन देखने में आया है कि इसके बावजूद कि अन्सार की आयु एक पक्की और गम्भीर आयु है जमाअत के साथ नमाज़ की ओर उतना ध्यान नहीं है जितना होना चाहिए। अतः अन्सार को विशेष रूप से सर्वाधिक इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए कि उनका प्रत्येक सदस्य जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का आदी हो बल्कि प्रत्येक नासिर को स्वयं अपना निरीक्षण करना चाहिए और प्रयास करना चाहिए कि वह जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का आदी हो, केवल बीमारी तथा अक्षम होने की स्थिति के अतिरिक्त जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने का अत्यधिक प्रयास करना चाहिए। यदि कोई मस्जिद अथवा नमाज़ सैन्टर निकट नहीं है तो उस क्षेत्र के लोग किसी घर में जमा होकर जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ सकते हैं। यदि यह सुविधा भी नहीं है तो घर के लोग मिलकर जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ें इसके द्वारा बच्चों को भी, युवाओं को भी नमाज़ और जमाअत के साथ नमाज़ के महत्त्व की चिन्ता हो।

अतः अन्सारुल्लाह वास्तविक रंग में अन्सारुल्लाह तभी बन सकते हैं जब अल्लाह तआला के दीन को क़ायम करने तथा उसके अनुसार कर्म करने और कराने में अपनी भूमिका निभाएँ। यदि अल्लाह तआला की इबादत जो इंसान के जन्म का उद्देश्य है उसके अनुसार कर्म नहीं कर रहे तथा जिनके निगरान बनाए गए हैं उनसे कर्म नहीं करा रहे अथवा कराने का प्रयास नहीं कर रहे, अपने नमूने नहीं पेश कर रहे तो केवल नाम के अन्सारुल्लाह हैं। आज तलवार और तीरों के द्वारा युद्ध नहीं हो रहा जहाँ सहायकों की आवश्यकता होती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तो फ़रमाया है कि हमारा ग़ालिब आने का हथियार दुआ है। अतः अन्सारुल्लाह बनने के लिए इस दुआ के हथियार को उपयोग में लाने की आवश्यकता है। इसके लिए अनिवार्य है कि अल्लाह तआला के बताए हुए तरीक़े के अनुसार इस हथियार को प्रयोग में लाया जाए और जब यह होगा तभी हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले भी होंगे अन्यथा आपने बार बार यही फ़रमाया कि यदि मेरी बातों को नहीं मानना और अपने भीतर पवित्र बदलाव नहीं पैदा करना, अपनी इबादतों के हक़ नहीं अदा करने तो फिर मेरी बैअत में आने

का कोई औचत्य नहीं। अतः प्रत्येक नासिर को विशेष रूप से आत्म निरीक्षण करना चाहिए कि वह किस स्तर तक नमाज़ का पाबन्द है, किस सीमा तक वह अपना नमूना अपने बच्चों के सामने पेश कर रहा है, उसकी नमाज़ों की हालत और स्थिति क्या है। क्या केवल बोझ समझकर नमाज़ें अदा हो रही हैं अथवा वास्तव में अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए हम यह सब कुछ कर रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नमाज़ के महत्त्व, इसका अनिवार्य होना, इसकी हिकमत, इसको पढ़ने की विधि, इसका उद्देश्य, इसका दर्शन शास्त्र तथा समय का दर्शन शास्त्र, अर्थात इस विषय पर विभिन्न दृष्टि से बार बार भिन्न भिन्न अवसरों पर ध्यान दिलाया है। आपके कुछ निर्देश इस समय पेश करूँगा जो नमाज़ के महत्त्व तथा हिकमत पर रोशनी डालते हैं। नमाज़ों को यथावत् नियमानुसार पढ़ो। कुछ लोग केवल एक समय की ही नमाज़ पढ़ते हैं, वे याद रखें कि नमाज़ें माफ़ नहीं होतीं यहाँ तक कि पैग़म्बरों तक को माफ़ नहीं हुईं। एक हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक नई जमाअत आई, उन्होंने नमाज़ की माफ़ी चाही। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस धर्म में अमल नहीं वह धर्म ही कुछ नहीं। इस लिए इस बात को ख़ूब याद रखो और अल्लाह तआला के आदेशानुसार अपने अमल कर लो।

फिर नमाज़ की वास्तविकता, महत्त्व तथा आवश्यकता तथा नमाज़ का स्तर क्या होना चाहिए इन बातों की व्याख्या करते हुए एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- नमाज़ क्या है? एक विशेष दुआ है परन्तु लोग इसको राजाओं का टैक्स समझते हैं। नादान इतना नहीं जानते कि भला ख़ुदा तआला को इन बातों की क्या आवश्यकता है, उसके व्यक्तिगत ग़िना (निःस्वार्थ) को इस बात की क्या आवश्यकता है कि इंसान दुआ तसबीह तथा गुणगान में लीन हो बल्कि इसमें इंसान का अपना ही लाभ है कि वह इस मार्ग के माध्यम से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। मुझे यह देखकर बड़ा खेद होता है कि आजकल इबादतें और तक़्वा तथा दीनदारी से प्रेम नहीं है। इबादत में जिस प्रकार का आनन्द आना चाहिए, वह आनन्द नहीं आता। दुनिया में कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसमें आनन्द तथा एक विशेष स्वाद अल्लाह तआला ने न रखा हो। अल्लाह तआला ने मानव को इबादत के लिए पैदा किया तो फिर क्या कारण है कि इस इबादत में उसके लिए स्वाद और आनन्द न हो। अब इंसान जब इबादत के लिए ही पैदा हुआ है तो फिर आवश्यक है कि इबादत में आनन्द और स्वाद भी उच्च श्रेणी का रखा हो, उच्च स्तरीय स्वाद और आनन्द भी होना चाहिए, नहीं तो अल्लाह तआला ने केवल पैदा किया और कोई लक्ष्य नहीं इसका अथवा इसका कोई लाभ नहीं या आनन्द नहीं इसमें प्राप्त हो रहा, तो किस प्रकार इंसान वह काम कर सकता है। उदाहरणतः देखो अनाज और खाने पीने की सारी चीज़ें इंसान के लिए पैदा हुई हैं तो क्या इनसे वह एक प्रकार का आनन्द और स्वाद नहीं पाता? क्या इस स्वाद और आनन्द तथा अनुभूति के लिए उसके मुंह में ज़बान मौजूद नहीं है? ख़ूब समझ लो कि इबादत कोई टैक्स और बोझ नहीं है। इसमें भी एक प्रकार का आनन्द और सरूर है और यह स्वाद एवं सरूर दुनिया के समस्त आनन्दों तथा समूचे स्वादों से उच्च श्रेणी एवं बुलन्द है। जैसे एक रोगी किसी अच्छी से अच्छी, स्वादिष्ट खाद्य सामग्री से वंचित है, इसी प्रकार से, हाँ ठीक ऐसे ही वह दुर्भाग्य पूर्ण मनुष्य है जो अल्लाह की इबादत में आनन्द नहीं पाता। अतः हमें, हममें से जो भी ऐसे हैं उनको चिंता करनी चाहिए।

फिर वास्तविक नमाज़ किस प्रकार की है और कैसी होनी चाहिए इस बात पर प्रकाश डालते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- याद रखो यह नमाज़ ऐसी चीज़ है कि इसके द्वारा दुनिया भी संवर जाती है और दीन भी लेकिन अधिकांश लोग जो नमाज़ पढ़ते हैं वह नमाज़ उनको धिक्कारती है जैसे फ़रमाया अल्लाह तआला ने कि- فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْن अर्थात लअनत है उन नमाज़ियों पर जो नमाज़ की वास्तविकता से ही अपरिचित होते हैं। फ़रमाया कि नमाज़ तो वह चीज़ है कि इंसान उसके पढ़ने से प्रत्येक प्रकार की निष्क्रयता एवं अशलीलता से बचाया जाता है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस प्रकार नमाज़ पढ़ना आदमी के अपने बस में नहीं होता तथा यह तरीक़ा ख़ुदा की मदद और सहायता के बिना प्राप्त नहीं हो सकता और जब तक इंसान दुआओं में न लगा रहे इस प्रकार की निष्ठा एवं भय पैदा नहीं हो सकता। अतः नमाज़ का स्वाद और आनन्द प्राप्त करने के लिए अल्लाह तआला की कृपा को प्राप्त करने की आवश्यकता है। और अल्लाह तआला का फ़ज़्ल मांगने के लिए फिर उसी के आगे झुकने की आवश्यकता है तथा चलते फिरते भी उसका गुणगान करने की आवश्यकता है तथा उसका स्नेह और भय मांगने की आवश्यकता है। यह हालत इंसान पैदा करे तो फिर नमाज़ों का भी आनन्द आता है।

यह जो फ़रमाया कि ان الحسنات يذهبن السيئات अर्थात नेकियाँ अथवा नमाज़ बुराईयों को दूर करती हैं या दूसरे स्थान पर फ़रमाया- नमाज़ अशलीलता तथा बुराईयों से बचाती है और हम देखते हैं कि कुछ लोग नमाज़ पढ़ने के बावजूद फिर बदियाँ

करते हैं। इसका जवाब यह है कि वे नमाज़ें पढ़ते हैं किन्तु आत्मा और रास्ती के साथ नहीं, वे केवल प्रथा और आदत के कारण टक्करें मारते हैं, उनकी आत्मा मृत है। वह नमाज़ बदियों को दूर करती है जो अपने अन्दर एक सत्यात्मा रखती है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- नमाज़ की विधि जो है, रुकूअ है सजदा है कअदा है, ये सारी विधियाँ नमाज़ में इस लिए रखी गईं हैं कि उस लक्ष्य को प्राप्त किया जाए, उस दिव्यात्मा को प्राप्त किया जाए। आप फ़रमाते हैं कि नमाज़ के अरकान वास्तव में आध्यात्मिक उठना बैठना है, इंसान को ख़ुदा तआला के समक्ष खड़ा होना पड़ता है तथा खड़े होना भी सेवकों की भांति है। रुकूअ जो दूसरा भाग है बतलाता है कि मानो तय्यारी है कि वह आज्ञा पालन के लिए कितना गर्दन को झुकाता है और सजदा अदब का कमाल तथा विनयता का सम्पूर्ण उदाहरण है कि जो इबादत का वास्तविक लक्ष्य है उसको प्रकट करता है। ये सत्कार की विधियाँ हैं जो ख़ुदा तआला ने यादगार के रूप में निश्चित कर दी हैं तथा शरीर को भीतरी रूप से अंश बनने के लिए इनको निश्चित किया है। अब यदि प्रत्यक्ष रूप में, जो भीतरी तथा बाहरी क्रिया का प्रतिबिम्ब है केवल नक़ल करने वाले की भांति नक़ले उतारी जावें, केवल हाथ बाँध लिए रुकूअ में चले गए, सजदे में चले गए, बैठ गए। यदि नक़लची की भांति केवल उठक बैठक ही करनी है, नक़ल ही उतारनी है और फ़रमाया इसे एक कठिन बोझ समझकर उतार फेंकने का प्रयास किया जाए तो तुम्हीं बताओ उसमें क्या आनन्द और स्वाद आ सकता है तथा जब तक आनन्द और सुरूर न आए उसका यथार्थ कैसे प्रकट होगा। नमाज़ में आनन्द और स्वाद भी बन्दगी और रबूबियत के साथ विशेष सम्बंध से उत्पन्न होता है। जब तक अपने आपको केवल शून्य अथवा अस्तित्व हीन के समान समझकर जो रबूबियत का ज़ाती उद्देश्य है, न डाल दे, उसकी कृपा और छाया उसपर नहीं पड़ती और यदि ऐसा हो तो फिर उच्च स्तर का आनन्द प्राप्त होता है जिससे बड़ा कोई सुरूर नहीं। उस स्तर पर जब इंसान की आत्मा अस्तित्व हीन हो जाती है तो वह ख़ुदा की ओर एक स्रोत की भांति बहती है तथा उस अल्लाह के अतिरिक्त प्रत्येक से सम्बंध विच्छेद हो जाता है, उस समय ख़ुदा तआला की मुहब्बत उस पर गिरती है। इस मिलाप के समय उन दो जोशों से जो ऊपर की ओर से रबूबियत का जोश होता है और विशेष दशा उत्पन्न होती है उसका नाम सलात है। अतः यही वह नमाज़ है जो पापों को भस्म कर देती है, अपने स्थान पर एक नूर और एक चमक छोड़ देती है जो सालिक (शिष्य) को रास्ते और कठिनाईयों के समय एक रौशन दीपक का काम देती है तथा प्रत्येक प्रकार के घास फूस और ठोकर के पत्थरों तथा झाड़ झंकाड़ से जो इसके मार्ग में आते हैं, चेतावनी देकर बचाती है और यही वह अवस्था जब कि إِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ का रूपान्तरण इस पर होता है क्यूँकि उसके हाथ में नहीं उसके दिल में एक रोशन चिराग़ हुआ होता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- फिर नमाज़ में विचलित होने का कारण बयान करते हुए कई बार लोग कहते हैं कि विभिन्न प्रकार से मन विचलित होता रहता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- जिन लोगों को ख़ुदा की ओर पूर्णतः ध्यान नहीं होता उन्हीं को नमाज़ में अनेक विचिलिताएँ आती हैं। देखो एक क़ैदी जब एक अधिकारी के सामने खड़ा होता है तो उस समय उसके दिल में कोई भटकाव आता है? कदापि नहीं, वह सम्पूर्ण रूप से अधिकारी की ओर तकता है तथा इस चिंता में होता है कि अभी अधिकारी क्या आदेश पारित करता है। ऐसे ही जब सत्य मन से इंसान ख़ुदा तआला की ओर पलटे तथा सत्य मन से उसके आसताने पर गिरे तो फिर क्या मजाल है कि शैतान विचलित कर सके।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- नमाज़ की सुरक्षा क्यूँ की जाए और नमाज़ क्यूँ पढ़ी जाए, क्या अल्लाह तआला को नमाज़ों की आवश्यकता है। अधिकांश लोगों के दिल में ये प्रश्न भी उठते हैं आजकल के नास्तिक प्रभाव के कारण से उठते रहते हैं। इस बात को स्पष्ट करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- ख़ुदा तआला को हमारी नमाज़ों की आवश्यकता नहीं, वह तो स्वार्थ हीन है तथा उसको किसी की आवश्यकता नहीं बल्कि इसका अर्थ यह है कि इंसान को आवश्यकता है तथा यह भेद की बात है कि इंसान स्वयं अपनी भलाई चाहता है तथा इसी कारण से वह ख़ुदा से सहायता मांगता है। क्यूँकि यह सच्ची बात है कि इंसान का ख़ुदा तआला से सम्बंध हो जाना, वास्तविक भलाई को प्राप्त कर लेना है। ऐसे व्यक्ति की यदि सारी दुनिया दुश्मन हो जाए और उसके विनाश के लिए उत्सुक हो तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती तथा ख़ुदा तआला को ऐसे व्यक्ति के लिए यदि लाखों करोड़ों इंसान भी मारने पड़ें तो मार देता है तथा उस एक के बजाए लाखों को नष्ट कर देता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यदि तुम अपनी नमाज़ को विनम्र तथा विवेक पूर्ण बनाना चाहते हो तो आवश्यक है कि अपनी भाषा में कुछ न कुछ दुआएँ करो। परन्तु अधिकांशतः यही देखा गया है कि नमाज़ें तो टक्कर मारकर पूरी कर ली जाती हैं, फिर लगते हैं दुआएँ करने। इससे यही प्रकट होता है कि नमाज़ तो एक अकारण टैक्स होता है यदि कुछ श्रद्धा

होती है तो नमाज़ के बाद में होती है। यह नहीं समझते कि नमाज़ स्वयं दुआ का नाम है जो बड़ी विनयता, विनम्रता, श्रद्धा, निष्ठा और करुणा से मांगी जाती है। बड़े बड़े महान कामों की कुन्जी केवल दुआ ही है। ख़ुदा तआला की कृपाओं के द्वार खोलने का पहला प्रकरण दुआ ही है।

फ़रमाया- देखो ख़ुदा तआला का इसमें कोई लाभ नहीं है बल्कि स्वयं इंसान ही का इसमें भला है कि उसको ख़ुदा तआला के समक्ष उपस्थित होने का अवसर दिया जाता है, विनती और करुणा करने का सम्मान दिया जाता है जिसके द्वारा यह अनेक कठिनाईयों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। मैं हैरान हूँ कि लोग क्यूँ जीवन व्यतीत करते हैं, जिनका दिन भी गुज़र जाता है और रात भी बीत जाती है परन्तु वे नहीं जानते कि उनका कोई ख़ुदा भी है। याद रखो कि ऐसा इंसान आज भी नष्ट हुआ और कल भी। फ़रमाया कि मैं एक आवश्यक उपदेश देता हूँ, काश लोगों के दिल में पड़ जावे। देखो जीवन बीता जा रहा है निष्क्रयता को छोड़ दो और करुणा धारण करो। अकेले हो हो कर ख़ुदा तआला से दुआ करो कि ख़ुदा ईमान को सलामत रखे और तुम पर वह राज़ी और प्रसन्न हो जावे। एक अवसर पर नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि अब भी उसकी रहमत का द्वार बन्द नहीं, सुशील मन पैदा करो, नमाज़ संवार कर पढ़ो, दुआएँ करते रहो, हमारी शिक्षानुसार चलो हम भी दुआ करेंगे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ तहज्जुद का आग्रह भी आपने फ़रमाया तथा अन्सारुल्लाह को तो विशेष रूप से इसकी भी व्यवस्था करनी चाहिए। आप फ़रमाते हैं- इस जीवन के समस्त सांस यदि सांसारिक कामों में व्यतीत हो गए तो आख़िरत के लिए क्या बचाया। तहज्जुद में विशेष रूप से उठो तथा सम्पूर्ण आस्था और विश्वास के साथ अदा करो। बीच में आने वाली नमाज़ों में नौकरी के कारण कठिनाई आ जाती है। दुनियावी कामों में भी कठिनाईयाँ झेल रहे होते हैं यदि नमाज़ के लिए थोड़ी सी कठिनाई उठा लो तो क्या बुराई है। यह अल्लाह तआला का कमाल फ़ज़्ल है कि उसने सम्पूर्ण और परिपूर्ण आस्था के मार्ग हमको नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माध्यम से बिना कष्ट तथा परिश्रम के दिखाए हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- **क़ुर्राता ऐनी फ़िस्सलात**, फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बात को स्पष्ट करते हुए कि वास्तविक एकेश्वरवाद किस प्रकार पूरा होता है फ़रमाया- तौहीद तभी पूरी होती है कि समस्त अभिलाषाओं का प्रदान करने वाला, समस्त रोगों का निवारण कर्ता वही एक अकेला अस्तित्व हो। जब तक इंसान सम्पूर्ण तौहीद पर क़ायम नहीं होता उसमें इस्लाम के प्रति स्नेह और महानता क़ायम नहीं होती तथा नमाज़ का आनन्द और सुरूर उसे प्राप्त नहीं हो सकता। इसी बात पर आधार है कि जब तक बुरे इरादे, अपवित्र तथा गन्दी योजनाएँ भस्म न हों, अभिमान और शेख़ी दूर होकर विनम्रता एंव विनयता न आए, ख़ुदा का सच्चा बन्दा नहीं कहला सकता तथा सम्पूर्ण बन्दगी को सिखाने के लिए सर्वोत्तम अध्यापक तथा सर्वोत्तम दृष्टि कोण नमाज़ ही है। फ़रमाया कि मैं फिर तुम्हें बतलाता हूँ कि यदि ख़ुदा से सच्चा सम्बंध और वास्तविक सम्पर्क चाहते हो तो नमाज़ पर कारबन्द हो जाओ और ऐसे कारबन्द बनो कि तुम्हारा शरीर न तुम्हारी ज़बान बल्कि तुम्हारी आत्मा के निश्चय तथा भावनाएँ सारी की सारी पूर्णतः नमाज़ हो जाएँ।

अल्लाह तआला हम सबको वास्तविक तौहीद पर क़ायम होने, अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करने तथा सुरूर से परिपूर्ण नमाज़ें पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अल्लाह के अतिरिक्त किसी को अपना उपास्य बनाने के बजाए हम सदैव अल्लाह तआला को अपना वास्तविक पूज्य बनाने वाले हों।

TOLL FREE NO: 180030102131